ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 12 | December 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i12.214

युवा वर्ग एवं सोशल मीडिया (Social-Media) की बढ़ती लोकप्रियता: एक अवलोकन

डॉ. नाथू लाल[1*], डॉ. रघुराज सिंगोदिया[2]

[1]सहायक आचार्य, भौतिक शास्त्र, राजकीय कन्या महाविद्यालय झुंझुनू
[2]सहायक आचार्य, प्राणी शास्त्र, राजकीय कन्या महाविद्यालय झुंझुनू
*Corresponding author: nlphys1518@gmail.com

सार संक्षेप

सोशल मीडिया ने ना केवल हमारे संवाद करने के तरीके को बदला है, बल्कि विचारों को साझा करने के तरीके और जीवन को भी बदल दिया है। यह एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म है, जहाँ हम अपने दोस्तों, परिवार, और दुनिया भर के लोगों से जुड़ सकते हैं। आज, सोशल मीडिया एक मानव जीवन का आवश्यक हिस्सा जो हमें कई प्रकार की जानकारी प्रदान करने के साथ साथ शिक्षित और हमारा मनोरंजन भी करता है। सोशल मीडिया के इस विशाल नेटवर्क ने हमारे जीवन को आसान बना दिया है, और यह आगे भी हमारे जीवन को बदलता रहेगा। यह शब्द समाज में विशेषकर युवाओं के लिए एक सामान्य ज्ञान बन गया है और यह इस डिजिटल युग की एक लोकप्रिय खोज है तथा ऐसा विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। किसी भी देश की प्रगति आर्थिक एवं राजनीतिक योगदान के साथ साथ लोक संस्कृति तथा जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता पर भी निर्भर करती है। आज इंटरनेट की पहुँच तकरीबन हर इंसान तक है और निःसन्देह, इंटरनेट ने हर व्यक्ति, व्यापार और क्षेत्र को प्रभावित किया है, पर जिस क्षेत्र को इंटरनेट ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है वह क्षेत्र पत्रकारिता है। वर्तमान में सोशल मीडिया न केवल विद्यार्थी बल्कि युवा वर्ग के सभी कार्यों तथा व्यवसाय के साथ साथ व्यक्तिगत, पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन को भी प्रभावित कर रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म राजनीतिक दलों और नेताओं के लिए मतदाताओं से सीधे जुड़ने के प्रमुख मंच बन गए हैं । यह शैक्षिक संसाधनों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और सहयोगात्मक शिक्षण मंचो तक पहुंच प्रदान करता है, तथा राजनीतिक विमर्श, सक्रियता और लामबंदी को बढ़ाता है । प्रभावशाली लोगों और विचारशील नेताओं के संपर्क में आने से उपयोगकर्ताओं को नई आदतें अपनाने या व्यक्तिगत लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरणा तथा कलाकारों, डिज़ाइनरों, लेखकों और संगीतकारों के कार्य और प्रक्रियाएँ देखकर, लोकप्रिय हैशटैग के माध्यम से नए विचारों और रुझानों की खोज कर, अपने हितों और जुनून पर केंद्रित समूहों में भाग लेकर, प्रेरणादायक उद्धरणों, कहानियों और दूसरों द्वारा साझा किए गए अनुभवों से प्रेरणा मिल सकती है। भारतीय न्याय संहिता में भी साइबर अपराध रोकने के लिए कई प्रावधान किए गए हैं।

सूचक शब्द: *सोशल मीडिया, जनसंचार माध्यम, राजनीतिक योगदान, सांस्कृतिक प्रभाव, सामाजिक प्रभाव, भारतीय न्याय संहिता*

प्रस्तावना

सूचना, समय और परिवर्तन प्रगति के सूचक है तथा प्रगति जीवित रहने की परिचायक है। विज्ञान एवं तकनीकी के हर नये अविष्कार ने मानव के जीवन को निरन्तर सरल बनाने का प्रयास किया है। सूचना वह शस्त्र है जो समय के साथ हो रहे बदलावों को परिभाषित करती है। सोशल मीडिया को 2001-2010 के दशक से पहले बहुत काम जानते होंगे लेकिन आज यह शब्द समाज में विशेषकर युवाओं के लिए एक सामान्य ज्ञान बन गया है जो इस डिजिटल युग की एक लोकप्रिय खोज है। उन्नति के इस दौर में टीवी, रेडियो और अखबार सूचना के मुख्य धारा से कब दूर चले गए और कब सूचना के नवीन माध्यमों ने उनके अस्तित्व को कम कर अपनी

धाक जमा ली, पता ही नही चला। इसका श्रेय इंटरनेट के आविष्कार को जाता है और इस अद्भुत तकनीक इंटरनेट का आविष्कार टिम बरनर्स ली ने किया था। टिम ने 1980 में यूरोप की न्यूक्लियर रिसर्च संस्था (CERN) में कंप्यूटर साइंटिस्ट के रूप में कार्य शुरू किया। इस संस्था में कार्य करते समय, 25 साल के टिम के दिमाग में अलग-अलग कंप्यूटर पर एकत्रित डाटा को सर्वर के ज़रिए आपस में जोड़ने का विचार आया, जिसे टिम ने 1989 में वर्ल्ड वाइड वेब के रूप में हक़ीक़त में बदल दिया। वर्ल्ड वाइड वेब तकनीक के क्षेत्र में एक ऐसा मास्टर स्ट्रोक था जिसके जरिए हर वह व्यक्ति जिसके हाथ में इंटरनेट कनैक्शन है, वह सूचना का आदान-प्रदान कभी भी, कही से भी, किसी भी समय कर सकता है। जब टिम बरनर्स ली ने 1989 में अपनी सहूलियत के लिए इस तकनीक का आविष्कार किया था, तब शायद ही उन्होने यह सोचा होगा कि उनका यह आविष्कार सूचना के क्षेत्र में इतनी बड़ी क्रांति ला देगा। पर हाँ, वो शायद इस बात से भली-भांति परिचित थे कि माध्यम भले ही परिवर्तित होते रहे पर इंसान की अभिव्यक्त करने की इच्छा हमेशा स्थायी बनी रहेगी।

किसी भी देश की प्रगति आर्थिक एवं राजनीतिक योगदान के साथ साथ लोक संस्कृति तथा जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता पर भी निर्भर करती है। आज इंटरनेट की पहुँच तकरीबन हर इंसान तक है और निःसन्देह, इंटरनेट ने हर व्यक्ति, व्यापार और क्षेत्र को प्रभावित किया है, पर जिस क्षेत्र को इंटरनेट ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है वह क्षेत्र पत्रकारिता है। किसी भी मुद्दे पर बहस करनी हो, प्रतिक्रिया देनी हो, आक्रोश जताना हो या फिर किसी भी सूचना को वायरल करना हो, इन सभी के लिए सिर्फ दो वस्तुओं कि ज़रूरत है, एक मोबाइल और दूसरा इंटरनेट कनेक्शन। सोशल मीडिया के कारण ही आज पूरा समाज एक वैश्विक गांव के रूप में जाना जा रहा है, जिसमें वैश्वीकरण उदारीकरण और आधुनिकीकरण के साथ-साथ सूचनाओं का तीव्र गति से संप्रेषण का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। अगर हम विश्व की बात न करके सिर्फ भारत की बात करे तो भारत में 200 मिलियन लोगों के पास घर हो ना हो पर मोबाइल जरूर है। लोग पढ़ना-लिखना ना जानते हो, पर इंटरनेट पर सोशल मीडिया हैंडल करना उन्हे बखूबी आता है। आज के समय में उपलब्ध विभिन्न सोशल मीडिया ने जनसंचार को और अधिक सार्वभौमिक बना दिया है। वर्तमान के इस सूचना क्रांति के दौर में भारत जैसे विकासशील देश में सूचना क्रांति के रूप में सोशल मीडिया का एक विशेष स्थान है।

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया एक ऐसा गैर-परंपरागत मीडिया (non-traditional media) है, जो अन्य सभी मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और समानांतर मीडिया) से अलग है। सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) बनाता है जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म (फेसबुक, व्हाट्सएप, एक्स (पूर्व में ट्विटर), इंस्टाग्राम, टेलीग्राम) आदि का उपयोग कर अपनी पहुंच बना सकता है। यह एक ऐसा विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है, जो द्रुत गति से सूचनाओं के आदान-प्रदान करने, जिसमें हर क्षेत्र की खबरें होती हैं, को समाहित किए होता है। सोशल मीडिया के अंतर्गत फोटो, वीडियो, सूचना या अन्य डॉक्यूमेंट आदि को आसानी से साझा किया जा सकता है। यह मीडिया स्पष्ट रूप से हर दिन बड़ा होता जा रहा है और दुनिया भर में अधिक से अधिक लोग इसका उपयोग कर रहे हैं और अपने परिचित लोगों के बीच इसके उपयोग और इसके सकारात्मक प्रभावों को भी बढ़ावा दे रहे हैं। हर साल नए और अधिक उन्नत सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म बनाए जाते हैं जिनमें अधिक दिलचस्प चीज़ें होती हैं जिन्हें इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के लिए पेश किया जा रहा है। यह सभी वर्गों के लिए एक आसान मंच है चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित, अमीर हो या गरीब, शहरी हो या ग्रामीण ।

वर्तमान में सोशल मीडिया न केवल विद्यार्थी बल्कि युवा वर्ग के सभी कार्यों तथा व्यवसाय के साथ साथ व्यक्तिगत, पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन को भी प्रभावित कर रहा है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया का छात्रों के जीवन में एक महत्वपूर्ण प्रभाव है तथा इसने शिक्षा व्यवस्था को एक नया स्वरूप प्रदान किया है। इसके लिए विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइट्स (यूट्यूब, व्हाट्सएप, एक्स एवं टेलीग्राम) काफ़ी लोकप्रिय हुए है जिनके माध्यम से देश विदेश के समाचार तथा विभिन्न विषयों की जानकारी छात्रों को शीघ्र ही आसानी से मिल जाती है। आज मोबाइल का प्रयोग करने वाला प्रत्येक इंसान शिक्षक, इंजीनियर, डॉक्टर तथा व्यवसायी हो न हो पर वो खुद को पत्रकार अवश्य मानता है। एक ऐसा पत्रकार जो अपने

विचार व्यक्त करने को तो स्वतंत्र है, पर उस स्वतंत्र विचार की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है। इंटरनेट पर वायरल गलत सूचना (fake news) इस अभाव की ओर स्पष्ट संकेत करती हैं। इंटरनेट पर कितनी अच्छी और सच्ची पत्रकारिता हो सकती है यह एक लंबे बहस का विषय है, लेकिन इंटरनेट पर साझा की गई सूचना की सत्यता को जांचना और उसकी ज़िम्मेदारी लेना हर उपयोगकर्ता नागरिक का फर्ज़ बनता है। सूचना का आदान- प्रदान अथवा संप्रेषण अगर प्रगति का सूचक है, तो विनाश का शस्त्र भी है। हम इस सच्चाई को जितनी जल्दी अपने जीवन में अमल करेंगे, उन्नति की राहें उतनी ही सरल होती जाएगी।

सोशल मीडिया (Social Media) सकारात्मक भूमिका अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए हैं जिनसे कि लोकतंत्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है जिससे किसी भी देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि हुई है। लोकप्रियता के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म है, जहां व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है। आज फिल्मों के ट्रेलर, टीवी प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो पाई है जिनमें फेसबुक, व्हॉट्सऐप, इंस्टाग्राम कुछ प्रमुख प्लेटफॉर्म हैं। वर्तमान समय में भारत में लगभग 920 मिलियन लोग इंटरनेट का उपयोग करते हैं, जो कुल जनसंख्या का लगभग 70 % है । इनमें से लगभग 885 मिलियन लोग ब्रॉड्बैन्ड इंटरनेट का तथा उनमे से लगभग 495 मिलियन सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं । इंटरनेट के कुल उपयोगकर्ता में से लगभग 130 मिलियन लोग फेसबुक, लगभग 140 मिलियन लोग व्हाट्सएप और लगभग 50 मिलियन लोग ट्विटर जैसे सोशल मीडिया साइट्स पर सक्रिय है। भारत में हर व्यक्ति की इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया तक पहुंच बनाने में निजी क्षेत्र की कंपनी रिलायंस जिओ का बहुत बड़ा योगदान है । इस कंपनी ने अपनी शुरुआत में वर्ष 2017 में भारत में सभी ग्राहकों को एक से दो वर्ष तक निःशुल्क इंटरनेट उपलब्ध करवाया था। सोशल मीडिया (Social Media) सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार की भूमिका अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है।

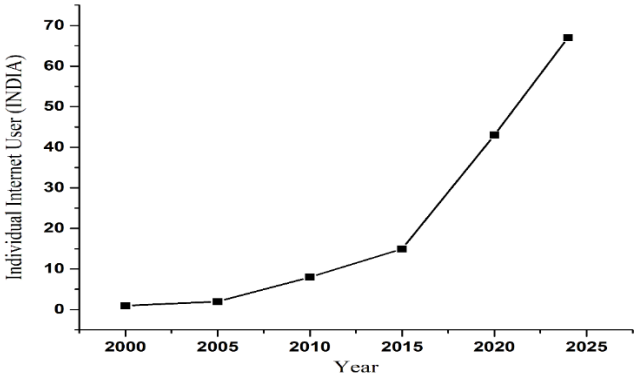

चित्र 1: भारत मे व्यक्तिगत इंटरनेट उपयोगकर्ता

[https://data.worldbank.org/indicator/IT.NET.USER.ZS?locations=IN]

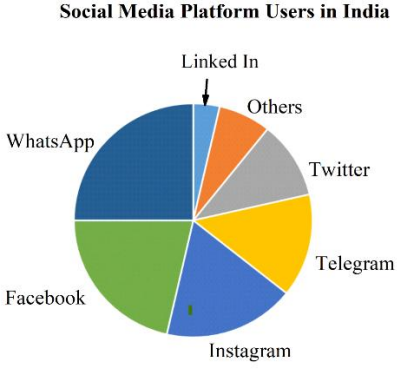

चित्र 2: विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोगकर्ता

[https://datareportal.com/reports/digital-2025-india]

उपरोक्त ग्राफ के माध्यम से हम यह कह सकते हैं कि 2015 के बाद भारत में इंटरनेट का व्यक्तिगत रूप से उपयोग करने वालों की संख्या में बहुत तीव्र वृद्धि हुई है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2024 में विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करने वाले उपयोगकर्ता चित्र 2 में प्रदर्शित है

सोशल मीडिया का राजनीतिक प्रभाव

सोशल मीडिया का भारत में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव रहा है, जिसने राजनीतिक प्रवचन, लामबंदी और शासन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है।

1. राजनीतिक जुड़ाव और लामबंदी: फेसबुक, एक्स (पूर्व में ट्विटर) और व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म राजनीतिक दलों और नेताओं के लिए मतदाताओं से सीधे जुड़ने के प्रमुख मंच बन गए हैं। वे इन मंचो का उपयोग अपने संदेशों को प्रसारित करने, समर्थकों को जुटाने और अभियान, रैलियां और विरोध प्रदर्शन आयोजित करने के लिए करते हैं। 2019 तथा 2024 के आम चुनावों के दौरान विभिन्न राजनीतिक पार्टियों ने जमकर सोशल मीडिया का उपयोग कर आमजन को राजनीतिक रूप से जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। इन आम चुनावों में सोशल मीडिया के उपयोग से वोटिंग प्रतिशत बढ़ा, साथ ही साथ युवाओं में चुनाव के प्रति जागरूकता बढ़ी। सोशल मीडिया के माध्यम से ही 'निर्भया' को न्याय दिलाने के लिए विशाल संख्या में युवा सड़कों पर आ गए जिससे दबाव में आकर सरकार एक नया एवं ज्यादा प्रभावशाली कानून बनाने पर मजबूर हो गई।

2. पहुंच और अभिगमत्या: सोशल मीडिया ने राजनीतिक जानकारी और चर्चा तक पहुंच को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे विभिन्न पृष्ठभूमि और क्षेत्रों के नागरिकों को राजनीतिक चर्चा में भाग लेने की अनुमति मिलती है। इसने राजनीतिक सामग्री को ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुंचने में सक्षम बनाया है जहां पारंपरिक मीडिया कवरेज सीमित हो सकता है। वर्ष 2019 तथा 2024 के लोकसभा आम चुनाव में विभिन्न राजनीतिक पार्टियों ने सोशल मीडिया के जरिए अपने विज्ञापन तथा कई प्रकार की सूचना आम जनता तक पहुंचाई थी। इसी प्रकार राजनीतिक पार्टियों द्वारा अपने घोषणा पत्र को सोशल मीडिया के माध्यम से भी आम जनता तक उपलब्ध करवाया था ।

3. चुनाव अभियान: चुनावों के दौरान, सोशल मीडिया जनमत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजनीतिक दल और उम्मीदवार मतदाताओं तक पहुँचने के लिए लक्षित विज्ञापन, प्रभावशाली समर्थन और वायरल सामग्री रणनीतियों का उपयोग करते हैं। इसने पारंपरिक अभियान रणनीतियों को बदल दिया है और राजनीतिक संदेश की गति और तीव्रता को बढ़ा दिया है।

4. जनमत और प्रतिक्रिया: सोशल मीडिया राजनीतिक नेताओं और पार्टियों के लिए वास्तविक समय की प्रतिक्रिया तंत्र के रूप में कार्य करता है। वे जनता की भावनाओं को समझ सकते हैं, मुद्दों पर त्वरित प्रतिक्रिया दे सकते हैं और तदनुसार अपनी रणनीतियों को समायोजित कर सकते हैं। इस प्रकार के कई उदाहरण देखे सकते हैं जो कि उपरोक्त बातों को पुष्ट करते हैं जिनमें 'INDIA AGAINST CORRUPTION' आंदोलन भी एक है, जो कि भ्रष्टाचार के खिलाफ महाअभियान था जिसे सड़कों के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी लड़ा गया जिसके कारण विशाल जनसमूह अन्ना हजारे के आंदोलन से जुड़ा और उसे प्रभावशाली बनाया।

5. पारदर्शिता और जवाबदेही: सोशल मीडिया ने राजनेताओं को नीतियों, निर्णयों और पहलों के बारे में नागरिकों से सीधे संवाद करने में सक्षम बनाकर शासन में पारदर्शिता बढ़ाई है। इसने नागरिकों को राजनेताओं को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराने का अधिकार भी दिया है। भारतीय राजनीति पर सोशल मीडिया का प्रभाव गोपनीयता, सुरक्षा और विनियमन से संबंधित चुनौतियों को भी जन्म देता है। घृणा फैलाने वाले भाषण, ध्रुवीकरण और विदेशी हस्तक्षेप जैसे मुद्दों ने सख्त विनियमन और दिशा-निर्देशों की मांग को बढ़ावा दिया है।

कुल मिलाकर, भारत में सोशल मीडिया का राजनीतिक प्रभाव बहुत गहरा है, यह राजनीति के संचालन, धारणा और जनता द्वारा उपभोग के तरीके को बदल रहा है। इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव हैं, जो चुनावों, शासन और सार्वजनिक चर्चा को महत्वपूर्ण तरीके से प्रभावित करते हैं।

सोशल मीडिया का सामाजिक प्रभाव

लोकप्रियता के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन मंच है, जहां व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है। साझा हितों के आधार पर संपर्कों को सुगम बनाता है, जिससे ऑनलाइन समुदाय और सहायता नेटवर्क का निर्माण होता है। विभिन्न सामाजिक मुद्दों के संपर्क में आने से उपयोगकर्ताओं को अधिक सामाजिक रूप से जागरूक और सक्रिय बनने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। सोशल मीडिया ने समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से गहरा प्रभाव डाला है। आज फिल्मों के ट्रेलर, टीवी प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो पाई है जिनमें फेसबुक, व्हॉट्सऐप, इंस्टाग्राम एवं एक्स (पूर्व में ट्विटर) कुछ प्रमुख मंच हैं। लक्षित विज्ञापन, उत्पाद का प्रचार और प्रत्यक्ष ग्राहक जुड़ाव को सक्षम बनाता है, तथा व्यवसाय प्रथाओं में परिवर्तन लाता है। इसने लोगों के संचार के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है, जिससे त्वरित संदेश, वीडियो कॉल और वैश्विक कनेक्टिविटी संभव हो गई है। अप्रैल 2018 की शुरुआत में, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (एससी/एसटी) के हजारों लोगों ने अत्याचार अधिनियम को कमजोर करने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ पूरे भारत में विरोध प्रदर्शन किया। यह सोशल मीडिया का ही प्रभाव था कि 2 अप्रैल 2018 को अनुसूचित जाति व जनजाति समाज के पूरे देश के लोगों ने एक साथ एकजुट होकर सुप्रीम कोर्ट के उस निर्णय के विरोध स्वरूप एकजुटता का संदेश दिया था।

यह शैक्षिक संसाधनों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और सहयोगात्मक शिक्षण मंचो तक पहुंच प्रदान करता है। यह राजनीतिक विमर्श, सक्रियता और लामबंदी को बढ़ाता है, लेकिन प्रतिध्वनि और ध्रुवीकरण के बारे में चिंता भी पैदा करता है। सांस्कृतिक मानदंडों, प्रवृत्तियों और भाषा को आकार देता है, जिससे व्यक्ति खुद को और दूसरों को कैसे देखते हैं, इस पर प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष के तौर पर, जबकि सोशल मीडिया कई लाभ प्रदान करता है, इसके व्यापक प्रभाव के लिए इसके सामाजिक निहितार्थों और जिम्मेदार उपयोग पर विचार करने की आवश्यकता होती है।

सोशल मीडिया का सांस्कृतिक प्रभाव :

सोशल मीडिया मंच का समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरा और दूरगामी रहा है। लोगों के संवाद करने के तरीके में क्रांति ला दी है, जिससे दुनिया भर में त्वरित संदेश, वीडियो कॉल और विचारों, फ़ोटो और वीडियो को साझा करना संभव हो गया है। इससे व्यक्तियों और समुदायों के बीच संपर्क आसान हो गया है। सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को विविध संस्कृतियों, भाषाओं और दृष्टिकोणों से परिचित कराता है। यह विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों के बीच बातचीत को सक्षम करके सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है, सांस्कृतिक विविधता की समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देता है। सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण ही विभिन्न देशों के लोग आपस में संपर्क स्थापित करते हैं जिसमें कई बार अंतिम पड़ाव उनका विवाह तक भी शामिल है। इस प्रकार सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण ही जाति धर्म तथा देश के बंधन को तोड़कर सांस्कृतिक गतिशीलता को बढ़ावा देता है। विविध संस्कृतियों और विचारों के साथ जुड़ने से सहानुभूति बढ़ती है और व्यक्ति का वैश्विक दृष्टिकोण व्यापक होता है और साझा हितों के आधार पर संपर्कों को सुगम बनाता है।

एक्स (पूर्व में ट्विटर) और इंस्टाग्राम जैसे मंच ने हैशटैग, मीम्स और इमोजी जैसे अभिव्यक्ति के नए रूपों को लोकप्रिय बनाया है, ये तत्व भाषाई और सांस्कृतिक बाधाओं को पार कर ऑनलाइन संचार का अभिन्न अंग बन गए हैं। सोशल मीडिया ने व्यक्तियों और समूहों को सामाजिक मुद्दों और राजनीतिक सक्रियता के लिए संगठित होने का अधिकार दिया है। इसने विरोध प्रदर्शनों, अभियानों और आंदोलनों के आयोजन, आवाज़ों को बुलंद करने और सामाजिक बदलाव लाने में मदद की है। सोशल मीडिया व्यवसायों के लिए अपने लक्षित दर्शकों तक पहुँचने और उनसे जुड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। इसने मार्केटिंग रणनीतियों को बदल दिया है, जिससे लक्षित विज्ञापन, प्रभावशाली सहयोग और सीधे ग्राहक संपर्क की अनुमति मिलती है।

सांस्कृतिक रुझानों और लोकप्रियता को आकार देने में सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामग्री जल्दी से व्यापक ध्यान आकर्षित कर फैशन, मनोरंजन और उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म राजनीतिक

चर्चा, चुनाव अभियान और प्रचार के लिए युद्ध के मैदान बन गए हैं। वे राजनेताओं और सरकारों को सीधे मतदाताओं से संवाद करने और जनमत को प्रभावित करने में सक्षम बनाते हैं। कुल मिलाकर, सोशल मीडिया का सांस्कृतिक प्रभाव बहुआयामी है, जो दुनिया भर में समाजों को विकसित करने और आकार देने के साथ-साथ अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है।

व्यक्तित्व विकास में सोशल मीडिया की भूमिका

वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र का एक अहम पहलू है। इस अधिकार के उपयोग के लिये सोशल मीडिया ने जो अवसर नागरिकों को दिये हैं, एक दशक पूर्व उनकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। दरअसल, इस मंच के ज़रिये समाज में बदलाव की बयार लाई जा सकती है। व्यक्ति अपने विचारों, रुचियों और रचनात्मकता को अभिव्यक्त कर सकते हैं, जिससे उनकी पहचान को आकार देने में मदद मिलती है। इस प्रकार से सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति को अपनी स्वयं की अभिव्यक्ति के साथ-साथ अपनी विस्तृत रूप से पहचान प्रदर्शित करने में मदद मिलती है। विभिन्न दृष्टिकोणों के संपर्क में आने से उपयोगकर्ताओं को स्वयं के विभिन्न पहलुओं का पता लगाने और समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सोशल मीडिया विभिन्न मंचो के माध्यम से समान रुचियों वाले अन्य लोगों के साथ-साथ समान विचारधारा वाले लोगों के साथ जुड़ाव की सुविधा प्रदान करता है, जिससे अपनेपन की भावना को बढ़ावा मिलता है। ऑनलाइन समुदाय व्यक्तिगत विकास में सहायता करते हुए प्रोत्साहन और प्रतिक्रिया प्रदान कर सकते हैं। सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर सामग्री निर्माण (ब्लॉग, वीडियो, रील, मीम्स आदि) में संलग्न होने से रचनात्मकता और संचार कौशल बढ़ सकते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर नेविगेट करने से तकनीकी कौशल और ऑनलाइन शिष्टाचार विकसित करने में मदद मिलती है। विभिन्न सामाजिक संस्थाओ तथा गैर सरकारी संस्थाओ के कई सदस्य अलग-अलग प्रांत के होने के बावजूद भी सोशल मीडिया के माध्यम से समन्वय स्थापित कर विभिन्न गतिविधियों को आसानी से पूर्ण किया जा सकता है। इस प्रकार से सोशल मीडिया के माध्यम से कौशल विकास निर्माण के साथ-साथ डिजिटल साक्षरता को भी बढ़ावा मिला है।

प्रभावशाली लोगों और विचारशील नेताओं के संपर्क में आने से उपयोगकर्ताओं को नई आदतें अपनाने या व्यक्तिगत लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरणा मिल सकती है। उपयोगकर्ता प्रभावशाली लोगों को अपना रोल मॉडल मानते हैं तथा सोशल मीडिया के विभिन्न मंचो पर उनका अनुसरण भी करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से कलाकारों, डिज़ाइनरों, लेखकों और संगीतकारों के कार्य और प्रक्रियाएँ देखकर, लोकप्रिय हैशटैग के माध्यम से नए विचारों और रुझानों की खोज कर, अपने हितों और जुनून पर केंद्रित समूहों में भाग लेकर, प्रेरणादायक उद्धरणों, कहानियों और दूसरों द्वारा साझा किए गए अनुभवों से प्रेरणा मिल सकती है। स्वयं के द्वारा की गयी विभिन्न सामग्री जैसे कि पोस्ट, ब्लॉग, वीडियो, रील पर प्रतिक्रिया और सहभागिता प्राप्त करने से आत्म-चिंतन और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा मिल सकता है तथा व्यक्ति अपनी यादों को अपने रिश्तेदारों तथा मित्रों के साथ साझा कर सहेज कर रख सकता है।

सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया जहां सकारात्मक भूमिका अदा करता है वहीं कुछ लोग इसका गलत उपयोग भी करते हैं। सोशल मीडिया का गलत तरीके से उपयोग कर ऐसे लोग दुर्भावनाएं फैलाकर लोगों को बांटने की कोशिश करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रामक और नकारात्मक जानकारी साझा की जा सकती है जिससे कि जन मानस की सोच पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कई बार तो बात इतनी बढ़ जाती है कि सरकार सोशल मीडिया के गलत इस्तेमाल करने पर सख्त हो जाती है और हमने देखा है कि सरकार को जम्मू-कश्मीर जैसे राज्य में सोशल मीडिया पर प्रतिबंध तक लगाना पड़ा था। मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में हुए किसान आंदोलन में भी सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया गया ताकि असामाजिक तत्व किसान आंदोलन की आड़ में किसी गलत घटना को अंजाम न दे पाएं। आधार सामग्री (डेटा) की गोपनीयता, निगरानी और व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा से संबंधित मुद्दे भी नजरअंदाज नहीं किये जा सकते।

भारतीय राजनीति में सोशल मीडिया का एक सबसे बुरा पहलू गलत सूचना, अफवाह और फर्जी खबरों का प्रसार है। व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म के जरिए भ्रामक सामग्री तेजी से फैलती है, जिससे अक्सर सामाजिक तनाव पैदा होता है और चुनावी नतीजों पर असर

पड़ता है। इससे विशेषकर युवा उपयोगकर्ताओं में चिंता, अवसाद और साइबर अपराध में वृद्धि होती है। सोशल मीडिया विभिन्न मंचो पर निरंतर संपर्क और मान्यता के लिए दबाव, विशेष रूप से युवा उपयोगकर्ताओं के बीच चिंता, अवसाद और कम आत्मसम्मान जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़ा हुआ है। सोशल मीडिया के व्यापक उपयोग ने गोपनीयता, आधार सामग्री (डेटा) सुरक्षा और ऑनलाइन सुरक्षा के बारे में महत्वपूर्ण चिंताएँ पैदा की हैं। डेटा उल्लंघन, पहचान की चोरी और साइबरबुलिंग जैसे मुद्दे इसके सांस्कृतिक प्रभाव के अंधेरे पक्ष को उजागर करते हैं।

सोशल मीडिया का नशा

वर्तमान पीढ़ी सोते-जागते, उठते-बैठते सोशल मीडिया का उपयोग करने की आदी हो गई है। सोशल मीडिया प्रयोग में लेने वाले सभी लोगों की रह-रहकर फ़ेसबुक, व्हाट्सअप, एक्स (पूर्व मे ट्विटर), टेलीग्राम तथा इंस्टाग्राम आदि पर अपना अकाउंट देखने की आदत हो गई है। प्रयोग में लेने वाले सभी लोग रह-रहकर अपनी पोस्ट पर लाइक्स गिनते रहते हैं। इसका मतलब यह है कि ऐसे सभी लोग सोशल मीडिया के आदी हो गए हैं और सोशल मीडिया उनके लिए एक मानसिक बीमारी का रूप ले चुका है। पिछले 2-3 वर्षों से करोड़ों लोगों को सोशल मीडिया की ऐसी लत लग गयी है कि अगर वे सोशल मीडिया न देखें, तो बेचैनी के शिकार हो जाते हैं । उन पर यह लत इस कदर हावी हो गई है कि अगर उनके मोबाइल की बैटरी घंटे भर के लिए भी ऑफ हो जाए, तो उनका मूड ऑफ हो जाता है।

पश्चिमी देशों में अब इस मानसिक बीमारी से निपटने के लिए लोग मनोवैज्ञानिकों और चिकित्सकों की सलाह लेने लगे हैं तथा इस लत से बाहर करने के लिए रिसोर्ट शुरू हो गए हैं। सोशल मीडिया से निजात दिलाने के लिए नए- नए स्टार्टअप्स मैदान में आए हैं और वे कॉर्पोरेट वेलनेस के नाम पर अपना व्यापार खड़ा कर रहे हैं। इस तरह के कॉर्पोरेट वेलनेस केंद्र और रिसोर्ट में सोशल मीडिया से दूर रहकर भी सामान्य जीवन जीने के तरीके बताए जाते हैं। इन वेलनेस केंद्र और रिसोर्ट में पालतू पशु - पक्षियों और प्रकृति के साथ घुलने-मिलने की कलाएं सिखाई जाती हैं, साथ ही तैराकी के प्रशिक्षण भी चलाये जाते हैं। साइकल चलाने, पेड़ पर चढ़ने, संगीत वाद्य यंत्र बजाने आदि के साथ कई प्रकार के सृजनात्मक कार्यों का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। यह माना जाने लगा है कि सोशल मीडिया की अति, मानसिक व्याधि बनती जा रही है। कैलिफोर्निया में मीडिया साइकोलॉजी रिसर्च सेंटर नाम की एक गैरव्यावसायिक कंपनी शुरू की गई, इसका उद्देश्य समाज के अन्य क्षेत्र में व्यक्ति को जोड़ने का प्रयास करना है। ह्यूस्टन में चिकित्सक बाकायदा अपने मरीजों का इलाज कर रहे हैं। वहां के डॉक्टरों का कहना है कि सोशल मीडिया में लगे रहने की बीमारी पिछले वर्ष की तुलना में 20 प्रतिशत तक बढ़ गई है। अमेरिका तथा यूरोपीय देशों में इस प्रकार के कई नए स्टार्टअप शुरू हुए हैं, जो सोशल मीडिया से मानसिक बीमारी की हद तक जुड़े रहने वाले लोगों को सलाह-मशविरा देना है। यह स्टार्टअप अपने मरीजों को व्यक्तिगत रूप से भी सलाह देते हैं। यूरोपीय देशों में कई साल पहले ही डिजिटल डेटाक्स कंपनी खुल चुकी है। वहां की कुछ कंपनियों ने तो इस तरह का प्रशिक्षण भी शुरू कर दिया है जो अपने कर्मचारियों को सोशल मीडिया का उपयोग सही तरीके से करना सिखाएं। यूरोप के कई देशों में वेतन का भुगतान कार्य दिवस ही नहीं, कार्य के घंटों के आधार पर किया जाता है। ऐसे में अगर कोई कर्मचारी सोशल मीडिया को लेकर तनाव में है, तो उससे कंपनी की उत्पादकता भी प्रभावित होती है। इस बात का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि एक बार सोशल मीडिया के चंगुल से बाहर आने के बाद यह दूरी सतत बनाई रखी जाए। कुछ कंपनियों ने तो सेल्फ थैरेपी कोर्स भी शुरू कर दिए हैं। हर एक व्यक्ति की लत को खत्म करने के लिए एक ही फॉर्मूला काम नहीं कर सकता। इन कंपनियों का मुख्य ध्यान इस बात पर रहता है कि कर्मचारी किस तरह संतुलित रहकर कार्य करें। कर्मचारियों की उत्पादकता बनी रहे, इसमें कंपनियों की मुख्य रुचि होती है।

साइबर अपराध पर नए कानून

भारत के संसद ने 2023 मे भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) नामक विधेयक पारित किया है, साइबर अपराध पर नए प्रावधान जोड़े गए है, पहले भारतीय दंड संहिता मे साइबर अपराध पर प्रावधान नहीं थे । साइबर अपराध का मतलब अवैध उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए कंप्यूटर का उपयोग करना जैसे धोखाधड़ी करना चाइल्ड पोर्नोग्राफी पहचान चोरी करना या गोपनीयता का उल्लंघन करना आदि शामिल है । महिलाओ की निजता ओर उनके व्यक्तिगत(प्राइवेट) कार्यकलापों तथा निजी जीवन मे ताकझाँक

करने पर पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाओ के खिलाफ भी मामला दर्ज हो सकता है , इसी प्रकार किसी दूसरे के नाम पर फर्जी सोशल मीडिया अकॉउन्ट बनाकर धोखाधड़ी करने अथवा किसी की प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने वालों पर कार्रवाइ के लिए कानून जोड़े गए है, जो निम्न है -

धारा 77: महिलाओं की व्यक्तिगत गतिविधियों को देखने तथा उन्हें कैमरे या वीडियो में रिकॉर्ड करने पर एक से तीन वर्ष की सजा का प्रावधान किया गया है।

धारा 78(1): इंटरनेट ईमेल या किसी अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से महिला के जीवन में ताकझाँक करने को पीछा करना माना जाएगा। इस प्रकार का अपराध पहली बार है तो तीन वर्ष तक की सजा का प्रावधान है।

धारा 153: विध्वंसक या अलगाववादी गतिविधियों या देश की एकता अखंडता और संप्रभुता को समाप्त करने के लिए उत्तेजित करने, भड़काने या उकसाने वाले संदेश या वीडियो जारी करना जिनमे सोशल मीडिया पर जारी किए गए संदेश या वीडियो भी शामिल है। इस प्रकार की गतिविधियों के लिए सात साल से उम्र कैद और जुर्माना का प्रावधान रखा गया है।

धारा 196: इलेक्ट्रॉनिक या किसी भी माध्यम से धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर वैमनश्यता फैलाने पर तीन से पांच साल तक सजा का प्रावधान है।

धारा 197: इलेक्ट्रॉनिक या किसी भी माध्यम से धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर राष्ट्रीय एकता को खतरा पहुंचने पर तीन से पांच साल तक सजा का प्रावधान है।

धारा 294: किताबों या इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के माध्यम से अश्लील सामग्री की बिक्री पर दो से पाँच साल की सजा तथा 5000 से ₹10000 जुर्माना का प्रावधान है।

धारा 299: इलेक्ट्रॉनिक या अन्य किसी माध्यम से जानबूझकर दूर्भावना पूर्वक धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचने पर तीन साल तक की सजा का प्रावधान किया गया है।

धारा 308: डिजिटल अरेस्ट या किसी तरह संदेश भेजकर धमकी देने (एक्सटॉर्शन) पर दो से दस साल तक की सजा का प्रावधान किया गया है ।

धारा 335: कूटरचित दस्तावेज तैयार करना जिसमें नया शब्द इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज भी शामिल किया गया है।

धारा 336: जालसाजी, धोखाधड़ी के लिए कूटरचित दस्तावेज या इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड तैयार करने पर सात साल की सजा व जुर्माना का प्रावधान किया गया है

धारा 353: फेक न्यूज़ सहित इलेक्ट्रॉनिक या किसी माध्यम से कोई बयान झूठी जानकारी अफवाह फैलाकर सामाजिक समरसता बिगाड़ने पर तीन से पाँच साल की सजा हुआ जुर्माना का प्रावधान है ।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, सोशल मीडिया का प्रभाव बहुआयामी है, जो दुनिया भर में समाजों को विकसित करने और आकार देने के साथ-साथ अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है। लक्ष्यों को सार्वजनिक रूप से साझा कर जवाबदेही की भावना विकसित कर व्यक्तियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। सकारात्मक बातचीत और समर्थन आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हैं। चर्चाओं या लाइव सत्रों में शामिल होने से सार्वजनिक बोलने और प्रस्तुति कौशल में सुधार हो सकता है। कई शोध बताते हैं कि यदि सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और हमे डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है। सोशल मीडिया की लत को अभी तक आधिकारिक तौर पर मानसिक व्याधि के रूप में रिकॉर्ड नहीं किया गया है। यह माना जाता है कि फेसबुक, एक्स (पूर्व में ट्विटर), स्नेपचैट , इंस्टाग्राम आदि से लगातार जुड़े रहने पर हमारा दिमाग कुछ खास दिशाओं में सोच ही नहीं पाता। इसे शराब के नशे की तरह माना जा सकता है। गुड न्यूज मूवमेंट, पॉजिटिव वाइब्स ओनली और इंस्पायरिंग स्टोरीज जैसे अकाउंट उत्थानकारी सामग्री साझा करते हैं। कैसी विचित्र बात है कि सोशल मीडिया के कारण ही कई प्रकार के अपराध तथा वारदातें सामाजिक, राजनीतिक स्तर पर बढ़ भी रही हैं, और सोशल मीडिया के

माध्यम से ही इनके बारे में जागृति लाकर ऐसी घटनाओं को रोकने का प्रयास भी राज्य स्तर पर किया जा रहा है। साइबर अपराध रोकने के लिए भारतीय संसद ने 2023 में भारतीय दंड संहिता के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता लागू की है, जिसमें साइबर अपराध की रोकथाम अथवा अंकुश लगाने के लिए विभिन्न धाराएं जोड़ी गई है। याद रखें, प्रेरणा हर जगह है, अपनी रुचियों और जुनून का पालन कर, नए विचारों और प्रेरणा को जगाने के लिए सोशल मीडिया एक बेहतरीन संसाधन हो सकता है।

सन्दर्भ:

[1]. https://elearning.uou.ac.in/pluginfile.php/135019/mod_imscp/content/1/13_history_of_social_media.html

[2]. सोशल मीडिया पर निबंध: सोशल मीडिया के फायदे और नुकसान, विनय कुशवाहा Editor वेबदुनिया

[3]. Social-Media क्या है, इसके फायदे और नुकशान, प्रभान्जन साहू, Technical Author and cofounder (Hindime) (https://hindime.net/social-media-kya-hai-hindi/)

[4]. https://datatopics.worldbank.org/world-development-indicators/

[5]. सोशल मीडिया: समस्या व समाधान, दृष्टि आईएएस

[6]. सोशल मीडिया का भारतीय राजनीति पर प्रभाव, The Hindu (16 मई 2024)

[7]. उमेश कुमार राय. (2015). सोशल मीडिया का बढ़ता दायरा वरदान भी अभिशाप भी. Sahitya Samhita (साहित्य संहिता), 1(4), 6-10.

[8]. सोशल मीडिया, The Indian Express (21 & 22 फरवरी 2024)

[9]. गंगवार, रचना 'लोकतंत्र में जनमत निर्माण पर मीडिया का प्रभाव' राधाकमल मुखर्जी की चिंतन परंपरा, वर्ष 23 अंक 01 जनवरी-जून पृ.45

[10]. बजाज पूनम, चावला राजेश, 'सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव' राधाकमल मुखर्जी की चिंतन परंपरा, वर्ष 25 अंक 01 जनवरी-जून 2023 पृ.140

[11]. सुशील. (2024). सोशल मीडिया और युवा: प्रभाव और नियंत्रण. अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञानं शोध पत्रिका, ISSN: 2348-2605 (इंटरनेशनल पत्रिका), 12(2), 45-50.

[12]. डॉ0 अरविंद कुमार शुक्ल1. (2024). भारतीय लोकतंत्रः सोशल मीडिया एवं डिजिटलीकरण का प्रभाव. ldealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS) eISSN–2583-6986, 3(07), 48-53.

[13]. Neyazi, T.A. "Digital propaganda, political bots and polarized politics in India." Asian Journal of Communication 30.1 (2020): 39-57.

[14]. Kaur, S. Kaur, K. Verma, R. "Impact of social media on mental health of adolescents. Journal of Pharmaceutical Negative Results" 2022 Oct 20:779-83.

[15]. https://epaper.patrika.com/Jhunjhunu?eid=45&edate=10/07/2024 .

Cite this Article

डॉ. नाथू लाल, डॉ. रघुराज सिंगोदिया, "युवा वर्ग एवं सोशल मीडिया (Social-Media) की बढ़ती लोकप्रियता: एक अवलोकन", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 12, pp. 28-36, December 2025.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i12.214*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.